माही बीहड़ों के पुर्नस्थापन हेतु मृदा एवं जल संरक्षण प्रौद्यौगिकियाँ

गोपाल लाल बागड़ी • रविशंकर कुरोठे • हरिबंश सिंह

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान,
अनुसंधान केन्द्र, वासद–388306, जिला – आनन्द (गुजरात)

Scanned with CamScanner

विषय सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	i
प्रस्तावना	ii
आभार	iii
1. परिचय	1
2. मृदा एवं जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों का वर्गीकरण	2-3
3. सस्यात्मक प्रौद्योगिकियाँ	4-15
4. अभियांत्रिक प्रौद्योगिकियाँ	16-32
5. वानिकी प्रौद्योगिकियाँ	33-37
6. सन्दर्भ	38

Scanned with CamScanner

प्राक्कथन

किसानों द्वारा मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकों को अपनाना, इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें इन तरीकों के बारे मे कितना ज्ञान और समझ है। कई किसान, मृदा एवं जल संरक्षण के उपायों को शीध्र अपना लेते है परन्तु कुछ इससे संबंधित तकनीकी ज्ञान की कमी, उसमे प्राथमिक रूप से आने वाली अधिक लागत एवं तकनीक के वास्तविक जरूरत के उपयुक्त न होने के कारण इसे अपनाने मे शिथिल रहते हैं।

ऐसा महसूस किया गया है कि पर्याप्त रूप में अपेक्षा के अनुरूप विकसित की गई मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियाँ न तो किसानों तक पहुचाई जा रही है और नहीं किसान उसे अपना रहे हैं। अभी भी किसान मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियों के परंपरागत उपायों से ही जुड़े हैं। नवीनतम तकनीकियों को किसानों द्वारा न अपनाए जाने के कई कारण हैं जिसमे मृदा एवं जल संरक्षण की नवीनतम तकनीकियों के बारे मे अभी पूरी जानकारी न होना प्रमुख हैं।

अतः इस दिशा में यह अत्यंत आवश्यक है कि मृदा एवं जल संरक्षण की नवीनतम तकनीकियों की संपूर्ण जानकारी को आसानी से समझ में आ सकने वाले सरल रूप में किसानों तक पहुँचाया जाए। यह बुलेटिन बीहड़ सुधार हेतु किसानों को मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकियाँ को समझने की क्षमता व ज्ञान को बढ़ाने में मदद करेगी।

यह बुलेटिन बीहड़ सुधार एवं जल ग्रहणक्षेत्र विकास में मृदा एवं जल संरक्षण तरीको के प्रचार हेतु प्रसार वैज्ञोनिकों के लिए भी बहुत उपयोगी होगी।

23/12/05

(विश्वनाथ शारदा)
निर्देशक
केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण
अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान,

Scanned with CamScanner